मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १४७ • जुलाई-२०१९

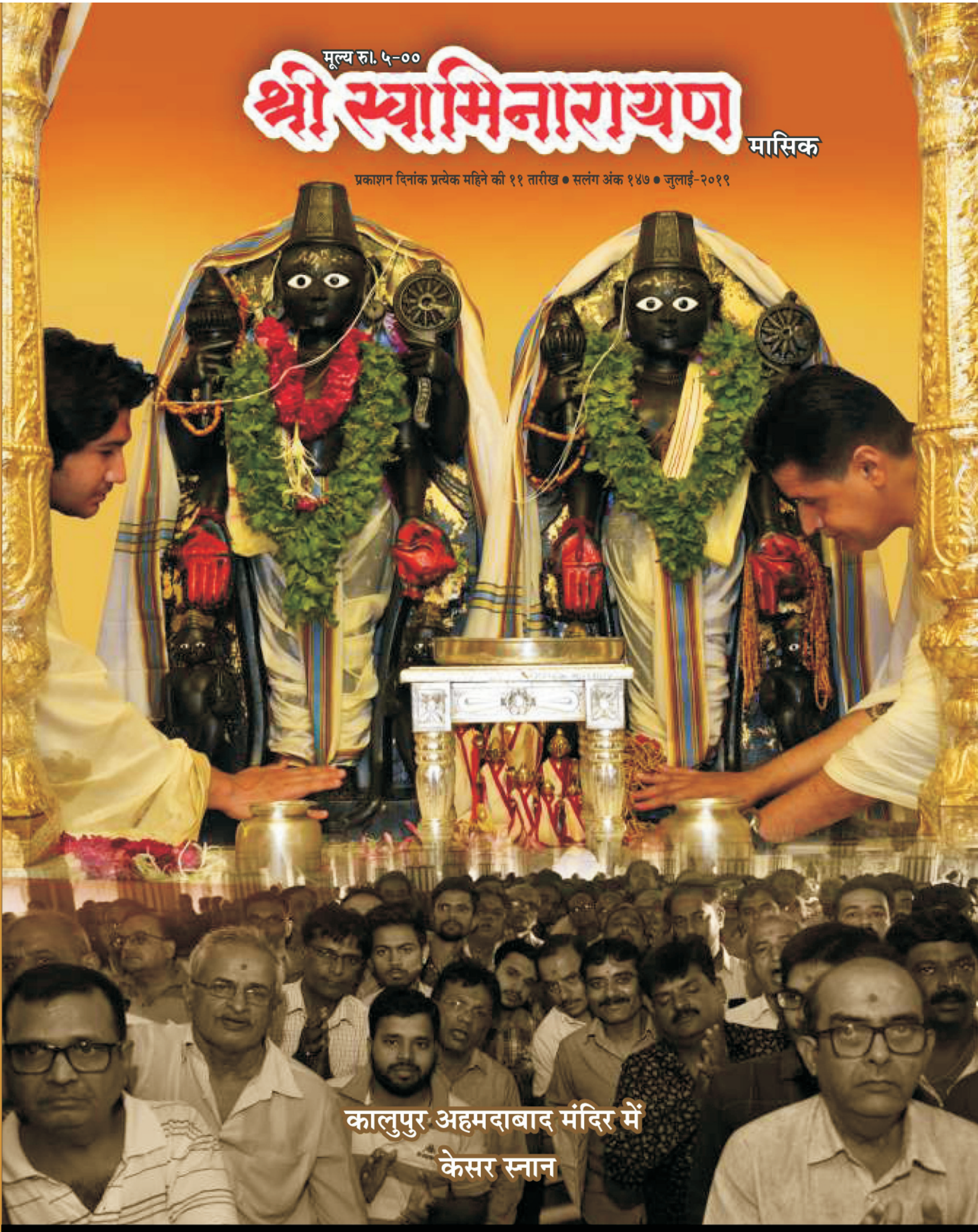

कालुपुर अहमदाबाद मंदिर में
केसर स्नान

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा (कड़ी) में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) देवपुरा गाँव में बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री । (३) एकादशी के दिन कालुपुर मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ करकमल द्वारा संत महादीक्षा ।(४) आकासणा मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (५) पलसाणा मंदिर के स्वर्ण जयंती के अवसर पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १३ ● अंक : १४७
जुलाई-२०१९

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	धर्मकुल के आश्रित	०६
०४.	अवतारी को सदैव नमन	०९
०५.	श्रीहरि स्थापित धर्मवंशी आचार्य परम्परा	१३
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१६
०७.	सत्संग बालवाटिका	१८
०८.	भक्ति सुधा	२०
०९.	सत्संग समाचार	२२

अस्मदीयम्

अभी पूरे विश्व में योग दिवस मनाया गया था। यह सब के लिये अच्छी बात है।

शरीर के स्वास्थ्य के लिये योग अति आवश्यक है। अनेक रोग योग से मिट जाते है। ऐसे कई उदाहरण मिलते है। बालक, युवा और वृद्ध योग द्वारा अपनी शरीर को स्वस्थ रख सकते है। पूरे विश्व में इस समय भी हमारे देश में मधुमेह नाम का रोग घर-घर हो चुका है। किसी को पैदल चलना पसंद नही है। पान, मशाला, गुटका का सेवन बढ़ता जा रहा है। टेन्सन भी इस रोग का मुख्य कारण है।

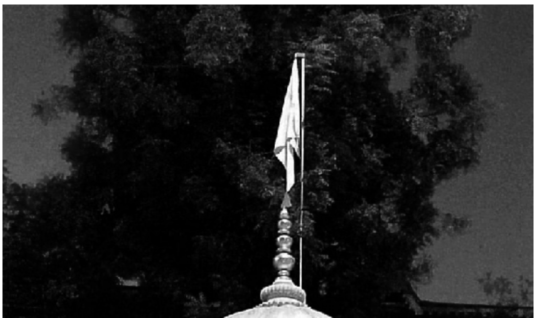

श्री स्वामिनारायण भगवान विचरण के समय में गोपाल योगी के पास योग सिखे थे। तथा जब आये तब भी सभी को सिखाते थे। भगवान कोई वस्तु बाकी नही रखे थे। शिक्षापत्री में छोटी-छोटी विषयो को जीवन में ले लिये थे। यदि हम उस अनुसार रहे तो हमे कभी भी दुख नही होगा।

लोग अभी कुछ वर्षो से योग, प्राणायाम का प्रयोग करते है। लेकिन हम लोगो को २५० वर्ष से श्रीजीमहाराज ने यह सब कुछ सिखाये थे। हमारे लिये यह नया नही है। इस लिये प्रत्येक हरिभक्तो को अपना सुदंर स्वास्थ्य, चलने की आदत योग, प्राणायाम तो करियेगा ही साथ में आहार-विहार पर विशेष ध्यान रखियेगा। बाजार की एवम् अशुद्ध आहार लेते हो तो बंद कर दे। शुद्ध और स्वास्थ्यपूर्वक भोजन ले। आप सभी का स्वास्थ्य अच्छा और स्वस्थ रहे।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१९)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर खारवी (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप श्री कष्ट भंजनदेव की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा (ता. कडी) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान अपने पुण्य हाथो से कराना।

२९ संत महादीक्षा अपने हाथो द्वारा पूर्ण किये।

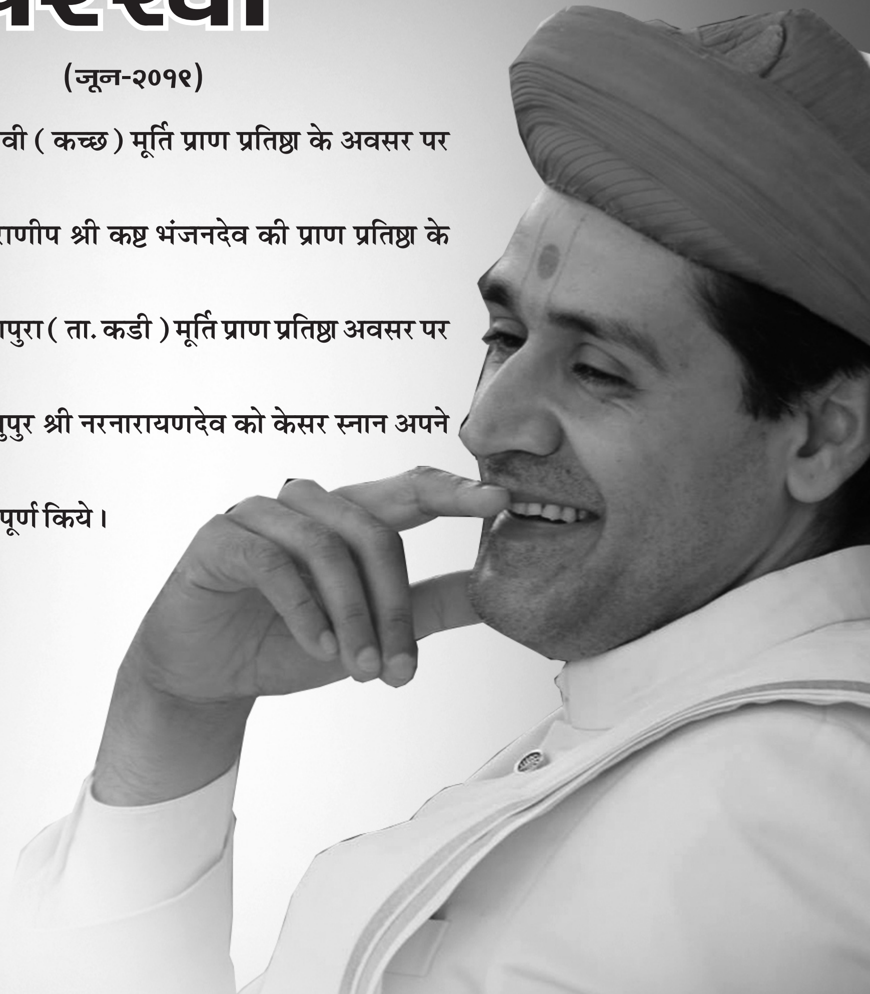

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१९)

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव पर आगमन।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान अपने पुण्य हाथो से किये।

धर्मकुल के आश्रित

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

धर्मवंश या धर्मकुल का अर्थ पुराणो में अलग-अलग स्वरुप में बताया गया है। परंतु ग.प्र. १ वचनामृत में श्रीहरि के स्वमुख से ''धर्मकुल के आश्रित'' जो उल्लेखित है। उसका अर्थ अत्याधिक स्पष्ट रुप से अपने सम्प्रदाय के ग्रन्थो से ज्ञात होता है। वचनामृत वडताल के १८ में स्वयं श्रीजी महाराज कहते है कि ''रामानंद स्वामी के गुरु वे रामानुजाचार्य है। उसी रामानंद स्वामी के शिष्य हम लोग है। वैसे रुप में गुरु परम्परा बनाये रखे। हम लोग अपने धर्मकुल का स्थापन किये है। तथा उसे बनाकर रखे'' । इस वचनामृत में स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवानने बता दिये थे कि धर्मकुल अर्थात् हमारा कुल।

स.गु. श्री मुक्तानंद स्वामी ने धर्माख्यान ग्रन्थ में इस बात को स्पष्ट शब्दो में कहे है।

अति पुण्यवंत धर्मकुल जेह जी,
सौना गुरु अमे कीधा तेहजी ।
माटे अमारा सेवक सर्वजी,
धर्मवंश सेवो तजी गर्वजी ॥

(धर्माख्यान कडवुं-१२७/१)

ते माटे ए धरेमकुलना,
आश्रित जे कोई थाय ।
अंत समे श्रीकृष्ण तेनी,
करशे आप सहाय ॥
(धर्माख्यान कडवुं-१२८/३)

भक्तचिंतामणि ग्रन्थ में स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है।

वळी धर्मवंशी द्विज धीर रे,
अवधप्रसादने रघुवीर रे ।
एह दत्तपुत्र छे, अमारा रे,
तेने कर्या छे गुरु तमारा रे ॥
(भक्तचिंतामणी-१६०/४७)

पुरुषोत्तम प्रकाश ग्रन्थ में भी स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी लिखते है।

धर्मकुलने जे अनुसरे, त्यागी गृही नर कोई नार ।
परिश्रम विना ते पामशे, अपार भवनो पार ॥
(पुरुषोत्तमप्रकाश ३८/४)

धर्मकुल अथवा धर्मवंश के आश्रित होने के बाद में की संतो एवम् हरिभक्तो को समावेश किये है। जो कोई भी धर्मकुल के आश्रित होता है। वे कम मेहनत में मोक्ष पा जाते है। इसके विना सागर पार करने की बात करे वह मूर्ख है। धर्मकुल अर्थात् धर्मदेव को कहते हुए। स्वयं श्रीजी महाराज के शब्द शब्द है।

काजे ए छे धर्मनुं कुल रे,
माटे ए वातनुं उडुं मूल रे ।
जेवुं अमारुं कुल मनाशे रे,
तेने तुल्य बीजुं केम थासे रे ॥
(पुरुषोत्तम प्रकाश-३९/७-८)

माटे सहु धर्मकुल मानजो,
सहु करजो एनी सेव ।
अन्य जन जेवा एह नहि,
ए छे जाणजो मोटा देव ॥
(पुरुषोत्तम प्रकाश-४०/१)

माटे सौ रे जो ऐने वचने रे,
त्यागी गृही सहु एक मने रे ।
रे जो धर्मवंशी ने गमते रे,
वर्तसो मां कोये मन मते रे ॥
(पुरुषोत्तम प्रकाश-४०/५)

यह बात तो सच्ची है जो श्रीजीमहाराज के कुल को मानेगे वैसे ही बनेतो। कई धर्मकुल या उनके आश्रित संतो, भक्तो लोग अपने को श्रेष्ठ बनने के लिए प्रयास करते है। लेकिन जब महाराज और नंद संत के वचन की बात आती है तो सत्य बात को स्वीकार कर लेते है।

सहजानंद स्वामी स्वयं शिक्षापत्री में किसके आश्रित बने बताते है।

"कृष्णदिक्षां गुरोः प्राप्तै स्तुलसीमालिके गले ।
धार्ये नित्यं चौर्ध्वपुत्रं ललाटादौ द्विजातिभिः ॥
(शिक्षापत्री-४१)

और धर्मवंशी गुरु के द्वारा श्रीकृष्ण की दीक्षा प्राप्त ऐसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनो वर्णो वाले हमारे सत्संगी उनके गले में तुलसी की माला नित्य धारण करते है। और ललाट, हृदय और दो हाथ चार स्थानो पर उर्ध्वपुंड्र तिलक करते है।

दीक्षा लिये बिना श्रीकृष्ण की पूजा का अधिकार प्राप्त नहि होता है। कंठी, माला और तिलक का भी अधिकार नही है। ऐसे ही स.गु. शतानंद स्वामी के वचन शिक्षापत्री अर्थदिपिका टीका में है। भक्ति के लिये दीक्षा आवश्यक है। और दीक्षा धर्मवंशी आचार्य के पास से ही ले। क्योकि यह अधिकार मात्र श्रीजी महाराज उनको ही दिया है। इस विषय में स.गु. शतानंद स्वामी लिखते है।

"गुरुपदस्थ धर्मवंश्यब्राह्मणात् सकाशात् तस्यैव स्वेन गुरुपदे स्तापितत्वादिति भावः"

गुरु पद में स्थापन किये गये धर्मवंशी ब्राह्मण के पास से उन्होने स्वयं गुरुपद का स्थापन किये है। ऐसा तात्पर्य है।

जो कोई भी त्यागी, गृहस्थ, धर्मवंशी आचार्यश्री के आश्रित होकर दीक्षा ग्रहण करे . उनके आश्रित होने

के कारण सत्संगी के कारण धर्मकुल का वेद, शाखा, प्रवर, गोत्र, कुलदेव दीक्षा प्राप्त करने वाले को प्राप्त होता है। ऐसे आश्रित होने पर अलौकिक फल मिलता है। और जिम्मेदारी भी है।

"मदाश्रितानां सर्वेषां धर्मरक्षणहेतवे।
गुरुत्वे स्थापिताभ्यां च ताभ्यां दीक्षा मुमुक्षवः ॥

(शिक्षापत्री-१२८)

हमारे आश्रित जो सभी सत्संगि तथा उनके धर्म की रक्षा हेतु इन सभी की बडाई के लिये हमने यह स्थापित किये है। ऐसे ये अयोध्याप्रसाद और रघुवीर तथा उनके लोगो को दीक्षा देना है।

इस श्लोक के टीका में स.गु. शतानंद स्वामीजी लिखते है। कि मेरे आश्रित मेरे शिष्य पुरुष और स्त्रियो सभी के धर्म रक्षा हेतु हमारे पुरुष ''स्वशरणागताः'' स्वयं के शरण में आये को दीक्षा देना। अथवा आश्रित करने का अधिकार धर्मवंशी आचार्यश्री को ही है। इसलिये गढडा प्रथम-१ के वचनामृत में जो ''धर्मकुल आश्रित'' शब्द प्रयोग किया गया है। वह धर्मवंशी आचार्य के लिये ही है।

श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र में श्रीहरि अपने मुख से कहते है। हे भक्तजनो ! आज से शुद्ध अयोध्याप्रसादजी और रघुवीरजी आप के आचार्य है। यह निश्चित माने (३४) नरनारायणदेश में जो मेरे आश्रित रहते है वे अयोध्याप्रसाद के शिष्य है यह निश्चित जान ले। (३५) लक्ष्मीनारायण देव देश में रहे मेरे आश्रित हे वे रघुवीरजी के शिष्य है। ऐसा माने। (३६)

(सत्संगिजीवन ४/६०)

एतयोश्चैतद्वंश्यानां करिष्यन्ति च आश्रयम्।
तान् कृष्णो भगवान् धाम देहान्ते नेष्यति स्वकम् ॥

(सत्संगिजीवन ४/६०/३९)

जो लोग इन मेरे दोनो पुत्रो या इस वंश में होने वाले गुरुपद वाले का आश्रय लेगे उन्हे श्रीकृष्ण मृत्यु के बाद अपने धाम में ले जायेंगे।

देश विभाग के लेख में श्रीजीमहाराज लिखते है कि ''साधु तथा ब्रह्मचारी तथा पाल्य ये सभी लोग सत्संगिजन आप दोनो को गादीवाला आचार्य बनाये है। ये हमेशा आप की आज्ञा में रहेगे और आपकी सेवा करेगे।

श्री धर्मवंश के दोनो गादी वाले आचार्य के विना अन्य मत वाला प्रत्येक मनुष्य शास्त्र, योग और तव गुणो से युक्त हो तो भी साधु और ब्रह्मचारी तथा पाल्य तथा सत्संगीयो को हमारी आज्ञा है कि अपने जीवन के कल्याण हेतु श्रीधर्मवंश के दो गादीवाले आराध्य को सदैव मनाईयेगा। जो मन, वचन, कर्म से आज्ञा में रहेगे। इसमें जो बदलाव करेगा। अन्य का आश्रय लेगा। उसके जीवन को इस लोक और परलोक में किसी समय भी सुख नही मिलेगा। और अधिक कष्ट प्राप्त करेगा।

''धर्मकुल के आश्रित ऐसे भगवान के जो भक्त है। वे भगवान से इच्छा करके ब्रहममय देह को प्राप्त करते है। जब देह का परित्याग करता है तो तब कोई गरुण के उपर बैठकर और कोई रथ पर बैठकर कोई विमान में बैठकर भगवान के धाम में जाता है। उसे योग समाधिवाला देख सकता है। (ग.प्र.-१) इस वचन का प्रत्यक्ष अर्थ है कि जो धर्मकुल का आश्रित भक्त धर्मवंशी आचार्य के द्वारा दीक्षा ग्रहण करता है। उसके शरीर ब्रह्ममय हो जाती है। मृत्यु के पश्चात भगवान के धाम में जाता है।

हमारे सम्प्रदाय के की लोग जो काल्पनिक मतवादियो धर्मकुल और धर्मकुल का अर्थ ऐसा कहते है। जो मानव धर्म का पालन करे वह धर्मवंशी है। इस प्रकार संसार में जैन धर्म के आश्रित हमसे अधिक धर्मपालन रहे है। तो क्या उन्हे धर्मवंशी कह सकते है।

धर्मदेव का कुल जो सम्प्रदाय की गद्दी पर विराजमान हे वही धर्मकुल-धर्मवंशी है। यह अपने सम्प्रदाय के सभी शास्त्रो का सत्य सनातन सिद्धान्त है।

अवतारी को सदैव नमन

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

वसंततिलकावृतम्, अखंडानन्द वर्णी कृत

हे धर्मपुत्र हरिकृष्ण तपः प्रियादय नारायणाखिलगुरो विजितेन्द्रियेश ।
ज्ञानिन प्रभोऽनिलसुतेष्ट हरे अजन्मन कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥१॥
भूमन् बृहद् वृतधरात्मद वासुदेव भक्त्यात्मजास्तिक महाव्रत साधुशिल ।
स्वामिन् स्वतंत्र धनमैचक नीलकंठ कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥२॥
योगीश्वरातिकरुणार्द्र विलोचनाब्ज सिद्धेश्वरोद्धवमताब्जविकाससूर्य ।
पाखंडखंडनपटौ स्वजनार्द्रचित कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥३॥
ब्रह्मन् परात्परविभोऽक्षरवास विष्णो कारुण्यसागर महामुनिवंदिताध्रे ।
भक्तप्रियोतम नराधिपवंद्यपाद कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥४॥
मुक्तेड्य चाश्रितजनार्तिहरप्रताप धर्माढ्यभक्तिपथपोषक दिव्यमूर्ति ।
तापत्रयाभिभावार्तजनानुराग कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥५॥
लक्ष्मीपते जनपते स्वपते परात्मन् मयापते मनिपतैऽजपते महात्मन् ।
गोपीपते सुरपतेऽर्कपतेऽव्ययात्मन् कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥६॥
शुद्धप्रगल्भपुरुषोत्तम मोक्षदायिन् दातांतिशांत विशदाशय भक्तलभ्यः ।
वाग्मिन् क्षमाजलनिधे शुभलक्ष्मपाद कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥७॥
सर्वोपकारक नियामक पुण्यकीर्ते निर्दोष निस्पृह वशिन्निजभक्तपूज्य ।
लोभादिदोषदमनाच्युत कौलहंत कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥८॥
यज्ञेड्य यजहृदयामर यज्ञतंतो यज्ञेश यज्ञफलदोतम यज्ञकर्ता ।
यज्ञेज्य यजविधिशंसन यज्ञमूर्ति कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥९॥
सर्वज्ञ दिव्यचरितातिमनोज्ञ सत्य वेदैकवेदयः पुरुषार्थद दीनबंधो ।
धर्मेष्ट निर्गुण निरंजन नित्यमुक्त कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥१०॥
गोविंद केशव वरेण्य महाधिराज दैत्यांतकाशुभहरिशुद वर्णीवेष ।
स्वस्तोत्रपाठकजनेप्सितसर्वदायिन् कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥११॥

अखंडानंदवर्णी द्वारा किये गये । महापूजा विधिमें पूजन पूर्ण होने के बाद भगवान का अमृताभिषेक करने के लिये भगवान श्री स्वामिनारायण १६० नामो का वर्णन करते स्तुति गान के लिये इस स्त्रोत्र में सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के धर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट होकर नाम धारण किये है । उन नामो में सबसे पहले मार्केन्डेय महामुनि जो चार नाम रखे है । कृष्ण, हरि, हरिकृष्ण, नीलकंठ उसमें से प्रथम नाम कृष्ण रखा था । उस प्रथम नाम से यहाँ नमस्कार करना वर्णीराज बताते है ।

हे धर्मपुत्र हरिकृष्ण तपः प्रियादय
नारायणाखिलगुरो विजितेन्द्रियेश ।
ज्ञानिन प्रभोऽनिलसुतेष्ट हरे अजन्मन
कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम्
॥१॥

प्रार्थनापूर्वक विनम्रता से परमात्मा के दिव्य नामो का उच्चारण करना है । इसके लिये सर्व प्रथम सम्बोधन वाचक विनय और नम्रताका सूचक है शब्द का प्रयोग किया गया है । हे धर्मदेव के पुत्र आप का हरिकृष्ण ऐसा नाम है । आप को तप करना अच्छा लगता है । सभी के आप आदि पुरुष है । नारायण है । जीवमात्र के गुरु आपके अलावा दूसरा कोई नही है । आप को इंन्द्रिया जीतने की आवश्यकता नहीं है । सभी के नियन्ता तथा ईश्वर है । ज्ञान शक्ति इच्छाशक्ति और क्रिया शक्ति के धारक है । ज्ञानियो के श्रेय तत्व है । प्रभु सबके नियन्ता है । पवनपुत्र हनुमानजी के जैसे जिनके यति ब्रह्मचर्य व्रत ईष्ट की पसंद है । भक्त योगियो ऋषि मुनियो के चित्त को अपने स्वरुप में रखे है । वे हरि अजन्मा है । फिर भी अनंत ब्रह्मांड में जीवो के कल्याण हेतु जो अवतार धारण किये है । वे सभी अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण कलियुग में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय

महामुनि ने कृष्ण रखा है। उस सर्वावतारी परमेश्वर में सदैव प्रणाम करता हूँ।(१)

भूमन् बृहद् वृतधरात्मद वासुदेव भक्त्यात्मजास्तिक
महाव्रत साधुशिल ।
स्वामिन् स्वतंत्र धनमैचक नीलकंठ कृष्णं नमामि सततं
अवतारिणं त्वाम् ॥२॥

पृथ्वी उपर अवतार धारण किये है। सब से बड़ा व्रत ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किये है। सभी जीवो को आत्मा का ज्ञान देने वाले अन्तर्यामी हो । अनंत कोटि ब्रह्मांड में व्याप्त हो । लेकिन प्रेमबस माता भक्ति के पुत्र हुए हो । सगुण परमेश्वर की भक्ति में आस्तिक श्रद्धावान हो । कभी-किसी दिन किसी से न माँगने वाले अयाचक व्रत धारण करने वाले हो। सरल स्वभाव सदाचारी हो। सभी के अधिपति स्वामी हो। विश्वतंत्र के नियामक हो। आषाढ मास के बादल वाले रंग के समान मानव शरीर वर्ण धारण किये हो। अनंत ब्रह्मांडो के जीवो के कल्याण हेतु अवतार लेते हो । आप सर्व अवतारो के अवतारी भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलिकाल में प्रगट होकर आये तब आप का नाम मार्कन्डेय महामुनि ने कृष्ण रखा था। उस सर्ववतारी परमेश्वर को मैं सदैव प्रणाम करता हूँ।(२)

योगीश्वरातिकरुणार्द्र विलोचनाब्ज
सिद्धेश्वरोद्धवमताब्जविकाससूर्य ।
पाखंडखंडनपटौ स्वजनार्द्रचित कृष्णं नमामि सततं
अवतारिणं त्वाम् ॥३॥

योग की साधना करने वाले योगियो के नियन्ता ईश्वर हो। जीवो के उपर अति करुणामयी दृष्टि से देखने वाले हो। उस समय आप की आँखे तने खिले हुए कमल के समान विशाल दिखाई देती है। कई प्रकार के साधनाओ से सिद्धि प्राप्त करने वाले सिद्धो के नियन्ता हो । उद्धव के अवतार ऐसे रामानंद स्वामी द्वारा बनाये इस उद्धव सम्प्रदाय श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का जिस प्रकार कमल का विकास सूर्य करता है। उसी प्रकार सम्प्रदाय का विकास करने में आप सूर्य के समान हो। पाखंडी धर्म के आचरण को खंडन करने वाले हो। अपने भक्तो के लिये अति करुम कोमल हृदय वाले हो । अनंत ब्रह्मांडो में जीवो के कल्याण हेतु जो अवतार धारण करते हो वह सर्व अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलियुग में प्रगट हुए। तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनि ने कृष्ण रखा। उस सर्वावतारी परमेश्वर की मैं सदा वंदना करता हूँ।(३)

ब्रह्मन् परात्परविभोऽक्षरवास विष्णो कारुण्यसागर
महामुनिवंदिताध्रे ।
भक्तप्रियोतम नराधिपवंद्यपाद कृष्णं नमामि सततं
अवतारिणं त्वाम् ॥४॥

आप साक्षात ब्रह्म है। पर से अग्र हो। कोई समझ न सके ऐसे है आप। प्रभु सभी को धारण करने वाले हो। सदैव अपने अक्षरधाम में निवास करते हो । सर्व व्यापक हो । जीवो के उपर करुणा करने वाले सागर के समान हो । बड़े बड़े मुनि जिनके चरण कमलो की वंदना करते है । भक्त जिन्हे अति प्रिय है . मनुष्य, राजा देव और मुनि जिनके चरणो की वंदना करते हे। अनंत कोटी जीवो के कल्याण के लिए जो अवतार

धारण करते हो, वे सर्व अवतारो के अवतारी भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलियुग में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनि ने कृष्ण रखा । उस सर्वावतारी परमेश्वर का मैं सदैव नमस्कार करता हूँ ।(४)

मुक्तेड्य चाश्रितजनार्तिहरप्रताप धर्माढ्यभक्तिपथपोषक दिव्यमूर्ति ।
तापत्रयाभिभावार्तजनानुराग कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥५॥

माया के बेघन से मुक्त हुए अक्षरमुक्तो जिनकी हमेशा स्तुति करते है । अपने आश्रित जीवो की सर्व प्रकार के दुखो से मुक्त करते हो या छुडाते हो । ऐसा जिसका प्रताप ऐश्वर्य है । धर्मयुक्त भक्ति मार्ग के पोषक हो । सदैव साकार दिव्य मूर्ति है । तीनो प्रकार के दुखो को अपने भक्तो को मुक्त करते है । अनंत ब्रह्मांडो के जीवो को कल्याण हेतु अवतार धारण करते हो आप सब अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलियुग में प्रगट हुए तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनिने कृष्ण रखा । उस सर्वावतारी परमेश्वर की मैं सदैव वंदना करता हूँ ।(५)

लक्ष्मीपते जनपते स्वपते परात्मन् मयापते मनिपतैऽजपते महात्मन् ।
गोपीपते सुरपतेऽर्कपतेऽव्ययात्मन् कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥६॥

शोभा सम्पत्ति धन द्रव्य के नियन्ता है । जीव मात्र के नियन्ता है । स्वयं के नियंता उनका कोई नियन्ता नही है । जिन्हे आत्मज्ञानी भी नही जान सकते है । जगत सृजन मायापति के नियन्ता है । निर्दोष ऋषि मुनि के आज्ञा के नियन्ता हो । संसार के सृजन कर्ता के नियन्ता हो । सबसे बड़ी आत्मा हो । उनसे कोई बड़ा नही है । प्रेमीभक्त ऐसे गोपियो के पति नियन्ता है । देव लोक में रहने वाले देवता और उसके नियन्ता राजा ईन्द्र के नियन्ता है । स्वंय अव्यय है . कभी उस में बदलाव नही होता है । अनंत ब्रह्मांडो जीवो के कल्याण के लिये जो अवतार धारण किये है । सब अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलियुग में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनि कृष्ण रखे थे । उस सर्वावतारी परमेश्वर मैं सदैव नमस्कार करता हूँ ।(६)

शुद्धप्रगल्भपुरुषोत्तम मोक्षदायिन् दातांतिशांत विशदाशय भक्तलभ्यः ।
वाग्मिन् क्षमाजलनिधे शुभलक्ष्मपाद कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥७॥

जो हमेशा शुद्ध सतो युक्त है । अति तेजस्वी है । सभी पुरषो में अति उत्तम है । पुरुषोत्तम है । अपने आश्रितो को मोक्ष प्रदान करने वाले है । जीवो को अभयदान मोक्ष देने वाले है । अति शान्ति मूर्ति है । मनुष्य देह धारण करना इन जीवो के उपर दया करके उदारता से मोक्ष देते है । अपने भक्तो को प्रदान करते है । अपने वाणी से जीवो के अज्ञान को दूर करते है । जीवो को क्षमा करना ऐसी सागर जैसे दृष्टि वाले है । अर्थात् क्षमा के सागर हो । आप का चरण जहाँ पर पडता है वहाँ पर शुभ मंगल हो जाता है । अनंत ब्रह्मांड के जीवो के कल्याण हेतु अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलिकाल में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनि कृष्ण रखो । उस सर्वावतारी परमेश्वर को मैं सदैव नमस्कार करता हूँ ।(७)

सर्वोपकारक नियामक पुण्यकीर्ते निर्दोष निस्पृह वशिन्निजभक्तपूज्य ।
लोभादिदोषदमनाच्युत कौलहंत कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥८॥

ज्ञानी, अज्ञानी, भक्त, अभक्त सभी के उपर उपकार करने वाले है । अक्षरब्रह्म तक सभी के नियन्ता है । सभी दोषो और अवगुणो से श्रेष्ट यश और कीर्ति वाले है । कलंक रहित है . इच्छा, कामना रहित है । स्वयं के नियन्त्रक है । अपने एकान्तिक भक्तो के वंदनीय है । भक्तो में त्याग लोभ, काम, क्रोधआदि दोषो को दूर करते है . अक्षरधाम से कभी विचलित नही होते है । नास्तिक, भूत भैरव आदि की उपासना तथा जीव हिंसा करने वाले शुष्कवेदान्तिक चार्वाक और कर्मवादी मत का खंडन करते है । अनंत ब्रह्मांड के जीवो के कल्याण हेतु अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलिकाल में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनि कृष्ण रखा । उसे

सर्वावतारी परमेश्वर को मैं सदैव नमस्कार करता हूँ ।(८)

यज्ञेड्य यजहृदयामर यज्ञतंतो यज्ञेश यज्ञफलदोतम यज्ञकर्ता ।

यज्ञेज्य यजविधिशंसन यज्ञमूर्ति कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥९॥

जप और होम यज्ञ से खुश होते है । यज्ञ करने वाले के हृदय में सदैव निवास करते है । यज्ञ करने का रहस्य आप ही है । यज्ञ तथा यज्ञ करने वाले के आप प्राण हो । तथा उनके ईश्वर है । यज्ञ का उत्तम फल आप देते है । यज्ञ करने वाला और उसके कारण आप ही है । यज्ञ से आप प्राप्त होते है । यज्ञ की विधिजो शास्त्रो में बताई गयी है । उसकी ही प्रसंसा करने वाले हो । वैसी आज्ञा देते है । इस तरह रहकर जो यज्ञ करता है । उससे ही मिलते हो । यज्ञ में आप साक्षात् मूर्तिमान हो । अनंत ब्रह्मांड के जीवो के कल्याण हेतु अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलिकाल में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनि कृष्ण रखा । उसे सर्वावतारी परमेश्वर को मैं सदैव नमस्कार करता हूँ ।(९)

ार्वज्ञ दिव्यचरितातिमनोज्ञ सत्य वेदैकवेदयः पुरुषार्थद दीनबंधो ।

धर्मेष्ट निर्गुण निरंजन नित्यमुक्त कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥१०॥

अनंत कोटी ब्रह्मांड के जीवो के मन, बुद्धि या शरीर से हो वाले कर्म को अन्य जानते है । दिव्य स्वरुप से सदैव विचरण करते हो । जो आप में अपना मन लगाया है । उस भक्तो को पहचानते है । उसे आप तीनो काल में एक समान रहने वाले है । सत्य हो । आप का स्वरुप सत शास्त्रो एवम् वेदो से जाना जा सकता है । मनुष्यो को चार प्रकार की सिद्धि आप प्रदान करते है । सत्कर्मी, पुण्यकर्मी कर्म या ज्ञान रहित ऐसे दीन लोगो के आप सच्चे मित्र और पथ प्रदर्शक है । वर्णाश्रम और सदाचार धर्म आप को प्रिय है । उसका अनुसरण करने वाला भी प्रिय है । मायावी ऐसे की सतोगुण तमोगुण, रजोगुण से दूर है । आप की सहायक नही चाहिए । लेकिन दूसरे को सहायक बनते है । सदा सर्व काल से आप ही स्वतन्त्र और नित्यमुक्त हो । अनंत ब्रह्मांड के जीवो के कल्याण हेतु जो अवतार धारण करते हो । वह सभी अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलियुग में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनिने कृष्ण रखा । उस सर्वावतारी परमेश्वर को मैं सदैव प्रणाम करता हूँ ।(१०)

गोविंद केशव वरेण्य महाधिराज दैत्यांतकाशुभहरिशुद वर्णीवेष ।

स्वस्तोत्रपाठकजनेप्सितसर्वदायिन् कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वाम् ॥११॥

ईन्द्रियो को जीतने वाले गोविन्द हो । नींद को वश में करने वाले केशव हो । जीव को मिलने योग्य है । भजन करने योग्य हो । अनंत कोटि ब्रह्मांड के राजाधिराज हो । जीव हिंसा और क्रूर कर्म करने वाले का काल हो । अमंगल तथा अशुभ कर्म को तुरंत दूर करने वाले हो । वर्णी की तरह भेष धारण करके जो आप के स्त्रोत अष्टक और नाम के पाठ का जप करता है । उसके सभी मनोरथ पूर्ण करते हो । अनंत ब्रह्मांड के जीवो के कल्याण हेतु अवतारो के अवतार भगवान श्री स्वामिनारायण इस कलिकाल में प्रगट हुए । तब उनका नाम मार्कन्डेय महामुनि कृष्ण रखा । उसे सर्वावतारी परमेश्वर को मैं सदैव

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

श्रीहरि स्थापित धर्मवंशी आचार्य परम्परा

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अषाढ सुद-१५ अर्थात् गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर जो वर्तमान वर्ष में ता. १६-७-१९ के दिन आ रहा है . वेद आधारित शास्त्रो में आध्यात्मिक मार्ग में भक्ति की सिद्धि के लिए प्राचीन काल से गुरु के द्वारा गुरुमंत्र लेकर गुरु की सेवा में रहकर भगवान के प्रगट स्वरुप की आराधना करना बताया जाता है। स्वामिनारायण सम्प्रदाय के लोग बड़े भाग्यशाली है कि पृथ्वी पर नराकृति धारण करके आये सर्वावतारी सर्वोपरि श्रीहरि अपने आश्रितो के लिये श्री नरनारायणदेव आदि ने अपने प्रगट स्वरुप को अपने हाथो द्वारा स्थापित करके उपासना को सुलभ किये । और दीक्षा की सुगमता के लिये धर्मकुल में स्वयं अपने पवित्र हाथ द्वारा धर्मवंशी आचार्य की परम्परा की स्थापना किये ।

श्रीहरिने वडताल के १८ में वचनामृत में सत्संगि हो उसे अवश्य जानने वाली बात करते हुए । गुरुपरम्परा की बात करके कहे कि हमारे धर्मकुल का स्थापन का कारण जाने । ''स्वामिनारायण संप्रदाय शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगिजीवन आदि नींव के प्रत्येक अच्छे शास्त्रो में धर्मवंशी आचार्य पद की महत्ता स्वयं श्रीहरिने कहा है । इसके बाद भी महत्ता स्वयं श्रीहरिने कहा है । इसके बाद भी कलियुग के प्रभाव के कारण मान, लोभ, ईर्ष्या आदि अंतःशत्रुओ के कारण कई भगवा धारी त्यागी और सफेद वस्त्रो धारण करके गृहस्थ कहे जाने वावे बापा अलग पथ में भटकते है । तथा अबोधभोले-भाले लोगो को गैर मार्ग पर भटकाते है ।

धर्मवंशी आचार्य परम्परा के आश्रय से आत्मा मोक्षमार्गी बनती है । कारण सम्प्रदाय का अर्थ मोक्ष की एक सुस्थापित परम्परा ऐसा सिद्ध होता है । श्रीहरि स्थापित इस परम्परा के अपने श्री स्वामिनारायण मासिक के माध्यम से स्मरण करते है । श्रीहरिने सम्प्रदाय में विशिष्टाद्वैत मत को मान्य करके सम्प्रदाय के निम्नलिखित आचार्य पम्परा है ।

श्रीकृष्ण
|
रामानुजाचार्य
|
रामानंद स्वामी (उद्धवजी)
|
सहजानंद स्वामी (श्री स्वामिनारायण भगवान)

अहमदाबाद देश	वडताल देश
अयोध्याप्रसादजी महाराज	रघुवीरजी महाराज
केशवप्रसादजी महाराज	भगवतप्रसादजी महाराज
पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराज	विहारीलालजी महाराज
वासुदेवप्रसादजी महाराज	लक्ष्मीप्रसादजी महाराज
देवेन्द्रप्रसादजी महाराज	श्रीपतिप्रसादजी महाराज
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज	आनंदप्रसादजी महाराज
कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज	नरेन्द्रप्रसादजी महाराज
	अजेन्द्रप्रसादजी महाराज
	राकेशप्रसादजी महाराज

शिक्षापत्री श्लोक १२८ के अनुसार दीक्षा देने का अधिकार मात्र केवल मात्र धर्मवंशी आचार्य को उसी प्रकार श्लोक नं. १३३ के अनुसार बहनो को दिक्षा देने का अधिकार मात्र आचार्य की पत्नी (गादीवालाश्री) को मिलता है। उसी प्रकार श्लोक नं. ६२ के अनुसार मूर्ति प्रतिष्ठा करने का अधिकार केवल मात्र धर्मवंशी आचार्य को है। शिक्षापत्री के अनुसार जो लोग न रहे वे सम्प्रदाय से बाहर है। ऐसा श्रीहरिने स्वंय श्लोक नं. २०७ में लिख दिये है।

विमुख पंथियो में आज्ञा और उपासना दोनो गलत है। लेकिन कष्ट तब होता है। सम्प्रदाय में रहकर कई साधु दोनो देश विभाग के लेख की अवगणना करके अपनी संस्थाओ में धर्मवंशी आचार्य सिवाय अन्य ब्राह्मणो के पास मूर्ति प्रतिष्ठा कराते है। देव के अन्तर्गत न होते हुए प्राईवेट गुरुकुल कई है। अब प्राईवेट ट्रस्ट बनाकर आश्रम का निर्माण करते है। आश्रम अर्थात् ऋषिमुनियो जैसा आश्रम नही है। लेकिन विशाल संकुल में यात्री और पर्यटक भाडा देने के लिये सैकडो ए.सी. नान ए.सी. कमरे होते है। भोजन की व्यवस्था सभा मंडप तथा प्राईवेट मंदिर है। सम्प्रदाय के सिद्धान्त को न जानने वाले भाविक भक्त ऐसे आश्रम के लिये लाखो रुपया दान देते है। और सम्प्रदाय के संविधान को तोडने में सहयोगी होते है। कारण यह सम्पति देव की नही है यह ध्यान दे।

सम्प्रदाय के सच्चा साधु वही हो सकता है। जो अपनी रुचि छोड़कर धर्मवंशी आचार्यश्री की अनुवृत्ति में रहकर सत्संग की प्रवृत्ति करे। श्रीहरि द्वारा देवो और आचार्यका मुमुक्षु लोगो से पहचान कराये। श्रीहरि लिखित शिक्षापत्री का ज्ञान कराये। श्रीहरि के समय में १००० से अधिक नंद संत थे। वे प्रत्येक एक-एक अवतार जैसे कार्य करने में समर्थ है। फिर भी कोई नंद संत श्रीहरि की आज्ञा को न मानकर अलग ट्रस्ट बनाकर सेवा श्रम नही बनाये। श्रीहरि अपने जगह धर्मवंशी आचार्य पद का स्थापन किये थे। त्यागी, गृही सभी आश्रितो को आचार्यश्री की आज्ञा में रहने को कहे है। शास्त्रो में धर्मवंशी आचार्यश्रीने श्रीहरि का अपर स्वरुप कहे है। देश विभाग लेख में श्रीहरि स्पष्ट लिखे है कि साधु तथा ब्रह्मचारी एवम् समस्त पाला, सत्संगी को आदेश है कि आप के जिसके कल्याण हेतु श्री धर्मवंश के दो गादीवाले आचार्य को सदैव मानना, मन, कर्म, वचन से आज्ञा में रहना यदि इस में बदलाव करेगे तो उनका जीव इस लोक और परलोक में किसी भी समय सुखी नहीं होगे। तथा अत्याधिक कष्ट भोगेगे।

श्रीहरि सम्प्रदाय में सभी विषय ध्यान पूर्वक स्पष्ट किये है। गुरुपूर्णिमा के दिन ऐसा देखने में आता है। गुरु पूर्णिमा के दिन ऐसा देखने में आता है। कि कई हरिभक्त जिस देश में रहते है उस देश के आचार्य को छोडकर गुरुपूजन करने के लिये दूसरे देश के आचार्य के पास जाते देखे गये है। और वहाँ जाकर भी वर्तमान आचार्य को छोडकर पहले के आचार्यश्री का पूजन करके उस सभा में आ जाते है। और कहते है कि हम पहले के आचार्यश्री के पास से गुरु मंत्र लिये है। इसलिये वही हमारे गुरु है। देश विभाग के लेख में श्रीहरिने स्पष्टता किये है। कोई हरिभक्त श्री लक्ष्मीनारायण देश में रहता हो और मंत्र उपदेश उस गादी के आचार्यश्री पास चोपडा में लिखा हो तो वो उसके पुत्र पौत्र ने बदल दिया हो तो उसे धर्मदा देना पडता है। श्री नरनारायण के गद्दी के आचार्य से गुरुमंत्र लिया हो तो गुरु मानना उसमें कोई दोष नहीं है। श्री नरनारायणदेव गादी के आचार्य को गुरु मानकर गुरु मंत्र ले यह मेरा आदेश है।आगे इससे विरुद्ध भी श्रीहरिने स्पष्टता किये है। संक्षिप्त में श्रीहरिने आचार्य पद की स्थापना किये है। दो गद्दी फिक्स है। दोनो गद्दी के आचार्य काल की गति अनुसार घुमते है। इस लिये जिस देश में रहते हो वहाँ के विद्यमान आचार्य को गुरु के रुप में मानता ताकि सम्प्रदाय में एकता बनी रहे। केवल अहमदाबाद और वडताल इन दो सनातन गद्दी को माने तो दो आचार्य से अधिक लोग शोभा नही देगे। दो से अधिक गद्दी को मानना भी इसके संविधान को तोडना है। इस लिये इसका विरोधईष्टदेव के प्रति विद्रोह है।

श्रीहरि चरित्रामृत सागर के पूरे-११ चरण तरंग-२ में स्पष्ट है कि श्रीहरिने एक गद्दी के बदले में दो गद्दी किये है। जो जीवो के हित में है। श्रीहरि ने संत-हरिजन को पूज्य ऐशी मोक्ष वाली गद्दी कहते है। जिसका नमन करने से जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है। गादीवाला आचार्यश्रीने जो नियमे बनाया है उस पर चले और पालन करे। जो लोग उन्मत होकर चले तब दोनो देश के धर्म के कुशळ ऐसे सत, वर्णी हरिभक्त इकठ्ठा होकर एकांत में धर्म के नियम का विचार करके कहे और उसी प्रकार आचरण करे। आगे पूर-८, तरंग-६४ में कहे है कि भूप और गुरु जितना नीति में दृढ रहेगे उतना ही वृद्धि होगी। नही तो जगह भ्रष्ट हो जाती है। श्रीहरि के विना

कुछ भी नही हो सकता है । अनंत कोटि ब्रह्मांड के प्रबन्धक श्रीहरि के इच्छानुसार होता है । तो स्वयं के द्वारा स्थापित सत्संग की दो गद्दी का प्रबन्धअथवा उस समय के धर्मवंशी आचार्यश्री की नियुक्ति श्रीहरि के इच्छानुसार ही होती है । ऐसा यदि मान ले तो दोनो आचार्यश्री में दिव्य भाव न होकर मनुष्य भाव आ जायेगा । इससे सम्प्रदाय के कलुषित माहोल हो जायेगा । गादी पर जो आचार्य है । उनसे द्रोह सीधे ईष्टदेव से द्रोह है । श्रीहरि धर्म के प्रिय है धर्म से नाता है । इसलिये सम्प्रदाय की अखण्डता के लिये श्रीहरि द्वारा स्थापित दो गद्दी के अलावा दूसेर अन्य गद्दी की परम्परा को न माने । यहा एक सत्संग की सेवा है । धर्मकुल के समस्त परिवार के सदस्य भी अपने श्रेय के लिये श्रीहरि स्थापित दो गद्दी तथा आचार्यो का आचरण करे । लाल पगडी तो कभी नही पहने । अहमदाबाद मंदिर के सभा मंडप में स्थित आचार्य परम्परा सनातन पाट पर उस धर्मवंशी आचार्यश्री को लाल पगडी पहनने का अधिकार है । क्योकि यह सनातन लाल पगडी धर्मवंशी आचार्यो की पहचान है । श्रीहरि का दिव्य तेज इस लाल पगडी में समाहित है ।

उसी प्रकार इन धर्मवंशी आचार्य द्वारा सामान्य दीक्षा लेने, पर सत्संगी की संज्ञा मिलती है । महादीक्षा लेने पर आत्मनिवेदी संज्ञामिलती है । सत्संग में हमे जो गुरु मिले है वैसे गुरु चौदह भुवन में से खोजकर दिये है । इस लिये पुरुषोत्तम प्रकाश में श्रीहरि कहते है ।

माटे सहु धर्मकुल मानजो,
सहु करजो ऐनी सेव ।
अन्य जन जवा एह नहि,
ऐ छे आवाजे मोटा देव ।
एक ब्राह्मण ने जाणो भक्त अति,
वली कावे, अमारु कुल ।
ऐने सेवतां सौ जन तमो,
पामशो सुख अतुल ।
मनवांछित वात मळशे,
वली सेवतां ऐना चारण ।
ऐ च अमारी आगन्या,
सर्वे काल जो सुखकरण ।
मन, क्रम, वचने मानजो,
ऐमा नहि संशय लगार ।
ऐह द्वारे मारे अनेक नो,
आज करवो छे उद्धार ।
ऐने राजी राखसो जो तमे रे,
तो तम पर राजी छीये अमे रे ।
ऐने राजी राखशे जे जन रे,
तेन अमने कर्या परशन रे ।
कां जे अमारे ठेकाण ऐ छे रे,
ते तो प्रवीण होय ते पीछे रे ।
बीजा जन ओ मर्म न लहे रे,
भोला मनुष्य ने बोलाई रहे है ।
अमे ऐमां ऐ छे, अम मांई रे,
ऐम समझो सहु बाई भाई रे ।
ऐथी अमे अलगा न रैये रे,
ऐमा रहिने ने दर्शन दैये रे ।

शास्त्रो में लिखे हुए ये शब्द अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति ऐसे पुरुषोत्तम नारायण श्री स्वामिनारायण भगवान है । यह धर्मवंशी आचार्य के लिये है । मनुष्य देह की दुर्लभता समझकर कपोल कल्पित अया राम गयाराम के पूजा में फंसे विना गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर अपने देश में विद्यमान आचार्यश्री का पूजन करके पवित्र हो जाये ।

जैने जोईये ते आवो मोक्ष मागवा रे लोल,
आजे धर्मवंशी ने द्वार नरनारी.... जेने टेक
आवो प्रगट प्रभुने पगे लागवा रे लोल,
वालो तुरत उतारे भवपार नरनारी... जेने०१
जन्म मृत्यु ना भाव थकी दुखा रे लोल,
शरण आओ मुमुक्षु जन नरनारी...जेने
शीद जाओ चो बीजे शिर कूटवा रे लोल,
आं तो तुरत थाशो पावन नरनारी....जेने०२

प्रेमानंद स्वामी कृत इस कीर्तन की अगली पंक्ति को पूरा पढ़कर श्रीहरि को पहचान ले । धर्मवंशी श्री आचार्य द्वारा उस मोक्ष दाता श्रीहरि के शरण को स्वीकार करके प.पू. बड़े महाराजश्री के शब्दो में झूला झूलते-झूलते, जलेबी खाते खाते कल्याण कर ले । संत श्रीहरि के हृदय है । संतो के समागम द्वारा मोक्ष का द्वार खुलता है । लेकिन कैसे संत ? तो धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा दीक्षा प्राप्त करके श्रीनरनारायणदेव और श्रीलक्ष्मीनारायण देव के गद्दी के प्रति निष्ठावान संत अपने प्राईवेट संस्था के लिये नही किन्तु श्रीहरि द्वारा स्थापित देव के लिये मंदिरो के लिये अपना जीवन समर्पण करने वाले संत के लिये ये बात है । यही सच्ची साधुता है ।

श्री
स्वामिनारायण
म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अक्षरधाम के अधिपति तीन गूढ संकल्प लिये थे । एक मूर्तियो की प्रतिष्ठा, दूसरा धर्मवंशी आचार्य पद स्थापन और तीसरा शास्त्रो की रचना करना था । उसमें से सर्व प्रथम श्रीहरिने अपने स्वरुप ऐसे श्री नरनारायणदेव की महा चमत्कारी और अलौकिक स्वरुप की स्थापना अहमदाबाद में किये ।

पछी दिवस वणते, पधरावी छे मूर्ति ।

नरनारायणदेव डेरे, बेठा वेऊ बदरीपति ॥ (भ.चि.प्र. ८६)

अहमदाबाद के ६ठ्ठे वचनामृत में स्वयं बताये है कि –

श्री स्वामिनारायण ने हमें अपना रुप जानकर अति आग्रह करके सर्व प्रथम इस श्रीनगर के वारे जान कर आये थे । इसलिये इस श्री नरनारायण के बारे मे मेरे बारे में भेद मत समझे ।

इस अवसर पर लाखो हरिभक्त और देवताओ की उपस्थिति थी । अनंत मुक्त इस अलौकिक अवसर पर दर्शन हेतु दिव्य देह में हाजिर थे । वेद की ध्वनि चारो तरफ थी । देव का जय जयकार चारो दिशाओ में व्याप्त था । अनंत मुक्त और देव दर्शन करके धन्य हो रहे थे । स्वंय अक्षरधामापति अपने स्वरुप की प्राण प्रतिष्ठा कर रहे थे ।

इस मंगल अवसर को याद दिलाने वाला यह केडिया श्रीहरि उस समय धारण किये थे । उस अवसर पर साक्षी श्रीहरि का पंचभौतिक शरीर का स्पर्श पाने वाला यह महादिव्य केडिया आचार्यश्री की परम्परा बनाये रखा है । परमकृपालु बड़े महाराजश्री ये दिव्य अलौकिक चमत्कारी केडिया (वस्त्र) सत्संग समाज के दर्शन हेतु म्युजियम में रखवाये है ।

सदा श्वेताम्बर श्रीजी पहनते थे । अंबर जरकसी वाला केडिया श्रीजीश्रीने नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा उत्सव में पहने थे । उसके दर्शन मात्र से उत्सव की खबर मिल जाती है । सत्संग के उत्थान के लिये श्रीजीने कितना कार्य किये है । यह दिखाई देता है । हमें अच्छा बनकर सफल करना है । श्री नरनारायणको छोडकर अन्य कही जाना नही और उनका आसरा दृढ करके रखे ।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि जून-२०१९

दि. ०२-०६-२०१९	सुरेशभाई आत्मारामभाई पटेल – न्यु राणीप
दि. ०८-०६-२०१९	प्रवीणभाई लखुभाई पटेल – हाथपालिया – प्रे. बड़े पी.पी. स्वामी
दि. ०९-०६-२०१९	अ.नि. नवनीतभाई वाडीभाई पटेल – मणीनगर – ह. धर्मिष्ठाबेन तथा डॉ. हिरेन तथा प्रतीतिका और हेनांशे
दि.१५-०६-२०१९	जगतसिंह चंदनसिंह चावडा – वरसोडा – ह. विणाबेन तथा नीरव – निर्णयनगर
दि. २३-०६-२०१९	राजीभाई मणीभाई पटेल – साबरमती

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जून-२०१९

रु. ११,०००/-	अ.नि. प्रभुदास उमेदभाई पटेल – कुबडथलवाले की १८ वी पुण्यतिथि पर – अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	अ.सौ.अ.नि. कुसुमबेन रसिकलाल शाह – बोटाद हा. अमेरिका उनकी पुण्यतिथि पर – ह. नमनभाई विपुलभाई शा. स्वामी हरिॐप्रकाश स्वामी के प्रेरणा से
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी – बोपल

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

जीवन परिवर्तन

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

वडताल के पास पेटलाद गाँव है । पेटलाद में उस समय गायकवाड का शासन था । और गायकवाड के द्वारा नियुक्त सूबेदार जिनका नाम कसियाजी था । अधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे । चारो तरफ उनकी धाक थी । पता नही कैसे विना लिये दिये कसियो को स्वामिनारायण भगवान से द्वेष भाव भरा था ।

वडताल में मंदिर के लिये सामान आता हो तब वह उसके उपर कर लेते थे । विनय किया जाता था । कि यह मंदिर के लिये जा रहा है तो बोले यह तो स्वामिनारायण मंदिर के लिये है । रामजी का मंदिर होता तो यह पत्थर मुफ्त में ले जाते । शेष स्वामिनारायण मंदिर के लिये नही है ।

एक बार गोपालानंद स्वामी उन्हे समझाने गये । थोडी राहत तो दिये लेकिन मन में भाव वैसा ही बना रहा ।

एक बार मंदिर के कार्य के लिये जोबन चौकीदार कसियाजी के घर गया । घर की व्यवस्था राजाशाही जैसी थी । जोबन चौकीदार आये है । ऐसा वहाँ के चौकीदारने कहा । बगल में कुर्सी रख दी गई । आइये चौकीदार आईये । बगल में बैठने दिया । कसियाजी राज नीतिज्ञतो थे ही अर्थात् धीमे आवाज में बात करने लगे और जोबन पगी का मजाक करने लगे । चौकीदार बुरा मत मानना मैने सुना है कि स्वामिनारायण गधे को गाय बना देते है । ये सही बात है ? जोबन पगी उनके मन की बात जान गये । तुरंत दृढता से बोले कसियाजी सच्ची बात है । याद करे कुछ वर्ष पहले आप के दरवाजे पर कुल्हाडी से किसने चोट किया है । कसियाजी को याद आया ? यह दृश्य सोचकर कांपने लगे.... यह जोबन पगी हमारे गले पर अभी न मारे तो अच्छा, जोबन चौकीदार बोले कि दरवाजे पर चोट मारते ही आप चूहे की तरह पिछेल दरवाजे से भागे गये थे । आप किससे डर गये थे ? यही जोबन चौकीदार मैं हूँ. आज आप कुर्सी देकर पास बैठाये है । पहले आप जिससे डरते थे । वह गधा मैं ही हूँ । अभी देखे मुझे गाय जैसा बना दिये है । नही तो क्या आप हमारे पास बैठ सकते थे क्या है । कसियाजी के रोये खडे हो गये । अभी तो कोई है नही हम दोनो ही कमरे में है । जैसे पपीता तोडा जाता है वैसे मेरा गला तोड देगा तो कहाँ शिकायत करने जाऊगा ?

कसियाजी समझर बात बदल दिये बोलिए बोलिये चौकीदार वह सरलता से पूछे थे । जोबन चौकीदार बोले मै एक ही नही मेरे जैसे कई दुर्जन का जीवन गधे की तरह था । हम लोगो का जीवन गाय जैसा पवित्र बनाने वाले स्वामिनारायण भगवान को पहचाने । कसियाजी कभी नही सुधरे । कई के साथ सफलता मिल जाती है ।

मित्रो ! भक्तराज जोबन चौकीदार की बात हुई । उनके जीवन परिवर्तन के बाद एक अच्छा अवसर पढने योग्य है । एक बार स्वामिनारायण भगवान के साथ यात्रा मे थे । प्रातः काल थोडा वातावरण प्रकाश मय हुआ । जोबन पगी को लगा प्रातः हो चुकी है । महाराज के साथ संत भी थे । पार्षद थे । दातुन की व्यवस्था करु । चारो तरफ नजर फेरे किसी खेत में बबूल दिखाई दिया । वहाँ जाकर चाकर-पाँच दातुन तोड कर लाये । और महाराज को दिये । महाराज बोले । जोबन पगी यह दातुन कहाँ से लाये हो ? महाराज सामने के खेत से लाया हूँ । प्रभु बोले कि खेत के मालिक से पूछा था । नही महाराज, तो इसे चोरी कहेगे । जाइये किसान के पास उससे क्षमा माँगो ।

और जोबन पगी चल दिये । वहाँ से कोई आदमी जा रहा था । उससे पूछे यह किसका खेत है ? खेत का मालिक कहाँ रहता है ? वह बताया सामने कोना दिख रहा है । गाँव के भाग में एक घर बताया । वह आदमी परोपकारी था । दौडकर बता आया कि सावधान रहना । उसका नाम सुना है । जोबन पगी ? हाँ वह तो कातिल और लुटेरा है । तो वह आप के घर पर आ रहे है । यह किसान दरवाजा बंद कर काँपने लगा । बालक औरत को बाहर कर दिया । और भगाने को कह दिया । तभी जोबन पगी आ गये । किसान काँप रहा था । जोबन पगी बोले भाई डरो मत मैं आप से एक बात कहने आया हूँ।

आप से माँफी माँगना है। जल्दी बोलिये, वह खेत आप का है ? हाँ उसमें बबूल है, हां है, उसमें से दातुन लिये है। यह भूल हो गयी है। इसी चोरी कहते है। इस लिये मुझे माफ करे। किसान बोला, अरे पगी पूरी बबूल ले जाओ। लेकिन यहाँ से जाये। जोबन पगी बोले भाई धबराइये मत जो आप समझ रहे है वह जोबन पगी अब मैं नही हूं। अब मैं स्वामिनारायण भगवान का भक्त हूँ। मैं आप से क्षमा माँगने आया हूँ। इसी का नाम जीवन परिवर्तन है।

बाल मित्रो ! आप ने सुना होगा की पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। उसी प्रकार भगवान और संत का समागम होने पर जीवन बदल जाता है। दुर्गुण समाप्त हो जाता है। सद्‌गुणो की वृद्धि हो जाती है। इसे सच्चा सत्संग कहते है।

•

आज्ञा पालन

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

प्राय: किसी अवसर पर महाराज के मुख से दादा खाचर की प्रशंसा सुनकर दादा खाचरके काका जीवा खाचर को अधिक ईर्ष्या होती थी। यह तो हमसे भी छोटा है। हमारे जितना व्यवहार का भी ज्ञान नही है। मेरा भतीजा है फिर भी महाराज वाह-वाह करते हे। बडी सभा में हमारे दादा तो दादा है। महाराज को कुछ पता नही चलता है। ऐसा दादा में क्या मिल गया है। दादा में। हम भी अवसर पर सेवा प्रदान करते है। फिर भी मेरी नही इस दादा की प्रशंसा करते है।

अब तो उनसे रहा नही गया। अवसर मिलने पर महाराज से पूछ ही लिये, महाराज बोले, जीवा खाचर ! इस प्रश्न का उत्तर कभी आपको देगे।

धरती को जला देने वाली गर्मी दो महीने बीत गये। वर्षाऋतु प्रारम्भ हो गई। सौराष्ट्र की धरती पर पूर्ण वर्षा हुई। पठारी भूमि के कारण नदी नाले उफनने लगे थे। पृथ्वी पानी से परिपूर्ण हो गयी थी। मिट्टी की सोंधी महक से वातावरण भर गया था। गढपुर के पास बहने वाली घेला नदी दोनो किनरो पर हिलोरे ले रही थी।

वर्षा थोडी कम हुई अर्थात् महाराज दादा खाचर, जीवा खाचर तथा पार्षद संतो के साथ घेलानदी के किनारे आकर बैठ गये। रिम झिम वर्षा और नदी में बहते जल को देखकर सभी खुश हुए। इसी समय विश्वमभर श्रीहरि की नजर एक यात्री पर पडी। वह यात्री भूखा था। वह रसोई बनाने के लिया आग जला रहा था। लकडी गीली और रिमझिम वर्षा के कारण आग नही जल रही थी। यह दृश्य देखकर ''अति दयालु रे स्वभाव छे स्वामिनो...'' ऐसा श्रीहरि यात्री को मुशीबत में देखकर व्याकुल हो गये। और जीवा खाचर से बोले ''देखो वह आदमी कितना परेशान है। इस यात्रीके लिये मार्ग में एक धर्मशाला बनाये। प्रभु की ऐसी बात सुनकर जीवा खाचर बोले ''यहाँ तो ऐसे कई लोग टहलते है। तो कितने के लिये धर्मशाला बनायेगे।''

महाराज वही बात दादा खाचर से भी बोले। वे सेवा के लिये तत्पर और महाराज की मरजी को जानने वाले दादा खाचर बोले - ''महाराज ! महाराज आप की आज्ञा शिरोधार्य है। अभी इस यात्री को अपने घर ले जा रहा हूँ। और वर्षा काल तक घर के दो बरामदे को खाली कर देता हूँ। जिससे अन्य दूसरे यात्रि रुक सके। वर्षा समाप्ति के बाद आप जहाँ कहे वहाँ धर्मशाला बनवा दे।''

महाराज दादा खाचर का उत्तर सुन कर अति प्रसन्न हुए। और जीवा खाचर से बोले, जीवा खाचर ! आप पूछते है न कि मैं दादा की क्यो प्रशंसा करता हूँ ? उसका यही कारण है। आप के उत्तर में और दादा के उत्तर में कितना अन्तर है। एक में पूरा समर्पण है। तथा गरीबो-दुखियो के प्रति गहरी सहानुभूति है। इस कारण से दादा खाचर हमे प्रिय है।

जीवा खाचर को समझ में आ गया मेरी कमी क्या है। दादा के उत्तर में सत्संग की खुश्बु थी। तथा संस्कार था। सेवा, सदाचार, संयम, सत्संग, परोपकार, आज्ञा, पालन की तत्परता संस्कार से मनुष्य की शोभा बढती है। बिना संस्कार का मानव और पशु में अन्तर नही होता है। रास्ता में पत्थर पडा हो यात्री को आकर्षित नही कर सकता है। यदि पत्थर कुशल शिल्पीकार के पास आ जाये तथा कारीगरी करके मूल्यवान बना देते है। संस्कार सर्वोत्तम बात है।

हमे भी नियमित संत समागम द्वारा भक्ति, भजन, सेवा, परोपकार के संस्कारो से दृढ और सद्‌गुणी बनना है। तभी ईष्टदेव हरि के प्रिय बनेगे। तभी मनुष्य जीवन और मानव जन्म में सफलता प्राप्त होगी।

भक्तिसुधा
BHAKTI-SUDHA

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "भ्रामक 'मैं' जायेगा तो आत्मारुपी 'मैं' की पहचान होगी"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम कुछ है। ऐसा विचार कई बार आता है। लेकिन मैं कौन हुँ ? हमारी सत्य पहचान क्या है ? ऐसा कोई महान कोई अपना परिचय है ? हम जो कार्य करते है। हम जिस जाति के है उसी का ही पहनावा है। अपनी नजर में जो अपनी पहचान है। जो ऐसा है तो यही भ्रम है। यह सापेक्ष सत्य है। यदि निरपेक्ष सत्य ज्ञात करना हो तो स्वयं से पूछना पडेगा कि मैं कौन हूँ ? स्वयं के भीतर जाकर खोजना पडेगा। हमे अपना चेहरा सुंदर लगता है। इस लिये सौन्दर्य प्रशाधन लगाते है। क्योकि ? हमें डर लगता है कि अच्छा नही लगेगा। उसी प्रकार हम लोग अपने आत्मा के उपर आवरण बना रखे है। उपर से अधिक अच्छा व्यवहार करते है। अन्तर में कुछ और होता है। ये आवरण रुपी अवगुण जो हमारे आतमा को घेरे हुए है। उसे हटाना डेगा। जैसे पानी प्राप्त करने के लिये कूआँ खोदते है। तो उसमे से कंकड-पत्थर मिट्टी बाहर निकालना पडता है। उसी प्रकार अपने खोज के लिये आवरण को दूर करना पडेगा। 'मैं को जानने के लिये सबसे बड़ा आवरण मैं ही होती है। मैं को पहचानने के लिये जो भ्रम है वह मैं अहंकार ही है। उसे हटाना पडेगा। वह अहंकार रुपी मैं है। अहंकार की कोई स्वतन्त्र सत्ता नही होती है। अहंकार अंधकार के समान होता है। किसी के कमरे में अंधकार हो तो उसे बाहर नही लाया जा सकता है। लेकिन कमरे में दीपक जला दे तो स्वयं प्रकाश हो जाता है। तो अंधकार की परिभाषा है। तो प्रकाश का न होना अंधकार है। अंधकार के सामने प्रकाश ले जा सकते है। लेकिन जहाँ प्रकाश होगा। वहाँ अंधकार नही ला सकते है। कहने की बात यह है कि ''प्रकाश की सत्ता है। जब प्रकाश के सामने अंधेरे की कोई सत्ता नही है। उसी प्रकार 'ज्ञान' के सामने अहंकार की भी कोई सत्ता नही है।

हमे ऐसा लगे कि मैं अधिक नम्र हूँ। मुझ में जरा सा भी अहंकार नही है। ये भी एक प्रकार का अहंकार है। यही अहंकार होता है। श्वासोश्वास की प्रवृत्ति सहज हो जाये उसे ''सहजता'' कहते है। 'दया' 'नम्रता' से सब अपने अंदर के गुण है। उन्हे याद करे यह सूक्ष्म अहंकार है। इस सूक्ष्म अहंकार को पहचानने में समय लगता है।

एकबार एक संत और गृहस्थ बैठे थे। और बात कर रहे थे। तो बात ही बात में संत बोले कि मैं लाखो रुपये पर लात मार कर संत बना हूँ। तो गृहस्थ ने पूछा कितने वर्ष हुआ है। आप को संत बने हुए। तो संत बोले ४० वर्ष पूर्ण हो गया है। गृहस्थ बोले बराबर लात नही मारे थे। यदि अच्छे से लगा होता तो ४० साल बाद याद नही आता। आप को यह कहना ही नही पडता कि हमने इतना त्याग कर दिया था। अर्थात् त्याग का भी अहंकार होता है। और भोग का भी अहंकार होता है। संसार में सुख का अहंकार है मुझे जो प्राप्त करना था प्राप्त कर लिया। अब आर्थिक रुप से मैं समृद्ध हूँ। ये भी अहंकार है। अपने पास जो संसार की वस्तुए है उनका ही अहंकार है। लेकिन ये वस्तु छिन जाये, जीवन में गरीबी आ जाये तो अहंकार नष्ट हो जाता है। लेकिन छोडने का अहंकार जो है उस कारण से दूसरो से अळग हूँ। ऐसी मन में भावना आती है। ये अंधकार है। त्याग का अहंकार शीघ्रता से नही जाता है। क्यो कि ? त्याग है यह कोई वस्तु नही होती है जिसको कभी नष्ट किया जा सकता है। वस्तु समाप्त हो जाती है लेकिन अहंकार नहीं जाता है। मैंने तो त्याग किया है नाश नही होगा। क्यो कि ? मन में ऐसी भावना आ जाती है। त्याग की सत्य परिभाषा क्या है ? वस्तु के त्याग को त्याग नही कहते है। लेकिन वस्तु के प्रति मूर्छा का त्याग कहलाता है। इस का अर्थ यह है कि जीवन में कितने भी कार्य करो ऐसी भावना न लाये कि यह मैने किया है। एक राजा थे। उन्होने सब कुछ त्याग दिया था। लेकिन अंदर की शांति नही थी। क्योकि ? अंदर का

अहंकार समाप्त नही हुआ था । संत उनसे बोले कल प्रात: ४ बजे अपने अहंकार को साथ में लेकर आना । राजा बोले अहंकार को कैसे साथ लाये । अहंकार कोई वस्तु नही, कोई मानव भी नही की उसे साथ लाये । तो संत बोले कि अहंकार क्या है ? तो राजा बोले अहंकार अन्दर का भाव है । और चित्त की दशा है । यह चित्त की दशा है तो आप के अन्दर ही होगी । आँख बंद करके बैठ जाईए । आप को दिखे, तो बोलना । मै डंडा लेकर बैठा हूँ । उसका नाश कर दूँगा । राजा आँख बंद करके बैठ गये । चार-पाँच घंटा हो गया । राजा के चेहरे का भाव बदलते गया । राजा को अंदर की प्रसन्नता मिल गयी । तो हम भी अपन अदंर खोज करे और त्याग विवेक रुपी दीपक लेकर देखे तो दिखाई नही देता है । क्योकि ? जो त्याग और विवेकरुपी ज्ञान का दीपक है उसके सामने अहंकार ठहर नही सकता है । जैसे अंधेरे कमरे में दीपक लेकर जाये अंधेरा नही रह सकता है । उसी प्रकार ज्ञान रुपी ''ज्योत'' द्वारा अपना मन जागृत होगा तो जागृत मन के सामने अंधाकर रुपी अहंकार ठहर नही सकता है । जागृति कैसी होनी चाहिए ? इसके तीन सूत्र है । बाहर की जागृति, अंदर की जागृति और आत्मा का जागरण ।

बाहर की जागृति अर्थात् हमारे चारो तरफ क्या हो रहा है । उसमें १००% जागृत रहना । मान ले आप यहाँ अभी सत्संग में बैठे है तो १००% जागृति के साथ सत्संग करे । तन, मन सम्पूर्ण रुप से सत्संग के समय में दे उसे सम्पूर्ण जागृत कहेगे । आप तन से यहाँ पर बैठे है लेकिन मन में विचार अलग आ रहे हो तो १००% जागृत नही है ।

दूसरे अंदर की जागृति रखना है । हमारे मन के किस कोने में क्या विचार चल रहा है । वे सब हमे ही पता चलता है । तो अन्दर गहराई से विचार करें । शाहमृग क्या करता है । शिकारी जब शिकार करने आता है तो अपना मुंह रेत में छिपा लेता है । उसी प्रकार हमे ज्ञात होता है कि अपने अंदर यह खराबी है । तो यह छिपाने का प्रयास नही करना चाहिए । हम छिपा रहे है लोग क्या कहेगे ? शायद यह आप की सज्जनता के लिये शोभा न दे । इससे आप को नही डरना है । हमारे अंदर क्या चल रहा है । उसका इलाज स्वंय कर सकते है । हमारे शास्त्र में सभी रोगो की दवा है । इस लिये अपने दुर्गुणो का दूर कर सकते है । कई बार हम रोग होने पर रिपोर्ट नही निकलवाते है । अधिक डायाबीटीज आयेगा तो ? कैसा आयेगा तो ? ऐसा मानकर रिपोर्ट नही निकलवाते है । तो क्या होता है ? रोग बढ जाता है । बाद में इलाज असम्बव हो जाता है । हमें यह ज्ञात हो जाये की हमारे अन्दर यह दुर्गुण है । तो उसे इनकार न करे । उसे दूर करने का प्रयास करे । अन्दर-बाहर दोनो तरफ जागृति रखे । आत्मा के जागरण के लिये कुछ नही करना पडता है । आत्मा का जागरण भगवान करते है । किसान बीज बोता है । बाद में खाद पानी देता है । फिर फल-फूल नही लाना पडता । वह स्वयं आ जाता है । किसान जैसी सेवा करता है वैसा फल प्राप्त होता है । हम जितने सजग होगे । इतना ही अच्छा आत्मा का जागरण होगा । दो बाते हमेशा याद रखे । सजावट-श्रृंगार नहि करना तथा डर नही रखे । अपने जीवन के खराब गुण दूर करने का प्रयास करना चाहिए । अहंकार की कोई स्वतन्त्र सत्ता ही नही हैं । हमारे अन्दर व्याप्त छोटी-छोटी मान्यताओ समझे और खराब त्यागने का प्रयास रखे । तो निश्चित शुद्ध बन सकते है ।

अषाढ सुद-१५ पूर्णिमा चंद्र ग्रहण के बारे में सूचना

अषाढ सुद-१५ ता. १६-७-२०१९ मंगलवार

ग्रहण स्पर्श रात्रि - १-३० मि. पर

ग्रहण मध्य रात्रि - ३-३० मि. पर

ग्रहण मोक्ष रात्रि - ४-३० मि. पर

इस ग्रहण का स्पर्श ता. १६-७-१९ मंगलवार के दिन रात्रि ९-४० पर पर ९-४० बाद बोजन न करे ।

ग्रहण पूर्ण होने के बाद स्नान, पूजा, पाठ, दान इत्यादि करने के बाद भोजन करे ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का केसर स्नान

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में विराजमान भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव ने जेठ सुद-१५ ता. १७-६-१९ को सोमवार के दिन प्रातः ७ बजकर ३० मिनट पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथो द्वारा केसर स्नान विधिवत रुप से पूरा किया गया । केसर स्नान के यजमान प.भ. बिपीनभाई सोनी परिवार था । अहमदाबाद शहर और गाँवो से आकर भक्तोने केसर स्नान का अलौकिक दर्शन करके आत्म विबोर हुए । पू. महंत स्वामी के संत मंडल ने सुंदर आयोजन किया था । श्री नरनारायणधेव के पूजारी ब्रह्मचारी संतोने अलौकिक ऋगांर करके दर्शन कराये ।(कोठारी शा. मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गाँधीनगर (से-२) द्वारा आयोजित कुडासण में कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा समस्त सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल से-२ गांधीनगर तथा कुडासन द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत पंचान्ह रात्री पारायण १५ मी से १९ मई २०१९ के बीच स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) के वक्ता पद से धामधूम से पूर्ण हुआ । ता. १५-५-१९ के दिन शाम को पारायण के यजमानश्री के निवास स्थान से पोथीयात्रा धामधूम की धुन भजन कीर्तन करते कथा स्थल पर पहुँचे थे । कथा अवसर के बीच स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) व्याख्यान माला में भगवान सम्बन्धी सुंदर बात किये थे । कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, रासोत्सव, आदि उल्लासपूर्वक मनाया गया था । गाँधीनगर मंदिर के पू. महंत स्वामी आरती उतारे थे । गांधीनगर तथा आस-पास के गाँवो के हरिभक्तोने कथा सुनकर धन्य हुए । कई हरिभक्तोने तन, मन, धन से सेवा दिये थे ।(शा. व्रजस्वामी - कोटेश्वर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) कुंडाल (ता. कडी) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत पू. शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के सुंदर मार्गदर्शन से समस्त सत्संग समाज कुंडाल (कडी) द्वारा बहनो का नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव और उसके अन्तर्गत श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण ता. १८-५-१९ से २४-५-१९ तक विधीवत रुप से मनाया गया था ।

स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी कोटेश्वर तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) के वक्ता पद से संगीत के साथ हुआ । इस अवसर पर अनेक राजनीतिक और धार्मिक महानुभाव लोग आये थे । कथा के बीच पोथीयात्रा, ठाकुरजी की नगर यात्रा, रुक्मणी विवाह, अन्नकूट दर्शन, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था । गांव के सभी हरिभक्तोने तन, मन और धन से सेवा किये थे । ता. २४-५-१९ के दिन प्रातः ठाकुरजी का अभिषेक करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा नूतन मंदिर में मूर्ति प्रति प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे पूर्ण किया गया था । इस अवसर पर बहनो का दर्शन-आशीर्वाद देने के लिए प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी आये थे । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) द्विदशाब्दी महोत्सव एवम् श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से एवम् पू. स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) समस्त सत्संग समाज तथा अ.नि. सोनी मलूकचंद जेठाभाई परिवार यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) का द्विशताब्दी महोत्सव अतर्गत श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रीय सप्ताह पारायण ता. २२-५-१९ से ता. २८-५-१९ के बीच स्वागत पार्टी प्लोट (भूयंगदेव - मेमनगर रोड) स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के मधुर कंठ द्वारा संगीत के साथ पूर्ण हुआ था । आज से २० वर्ष पहले यह मंदिर श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल के निष्ठावान अपने प.भ. करसनभाई कानजीभाई राघवाणी ने अपना घर श्री नरनारायणदेव को अर्पण कर दिये थे ।

इस महोत्सव के अवसर पर रात्रीय श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण, संहिता पाठ, ठाकरुजी का अभिषेक, अन्नकूट, महापूजा, श्री घनश्याम प्रागट्योत्सव, रासोत्सव

आदि कार्यक्रम उल्लास पूर्वक मनाया गया था । कथा के अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालश्री कथा श्रवण तथा बहनो को आशीर्वाद दिये थे । ता. २८-५-१९ के दिन निजमंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी की आरती की गई थी । कथा की पूर्णाहुति करके सभीको आशीर्वाद दिये । तथा तीर्थो से अधिक संख्या में संत आये थे । सम्पूर्ण अवसर पर सभा का संचालन स.गु.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) और स.गु.शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) ने शोभा बढाया थे । (कोठारीश्री मेमनगर - भक्तिनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप श्री कष्टभंजनदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. पू. स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) तथा स.गु. पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से न्यु राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर में धर्मकुल के कुल देवता श्री कष्टभंजन देव मूर्ति प्रतिष्ठा और सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज आदि देवो का ६ठ्ठा पाटोत्सव ता. ३१-५-१९ से ता. ४-६-१९ बीच उल्लास से मनाया गया था।

इस मूर्ति की प्रतिष्ठा के लिये स.गु. शा. स्वा. चैतन्यप्रभुदासजी (गांधीनगर) के वक्ता पद पर संत तुलसीदासजी कृत श्रीमद् रामचरित मानस कथा सुंदर रुप से पूर्ण हुई । इस अवसर पर श्री रामजन्मोत्सव, पोथीयात्रा, नगरयात्रा, मारुति यज्ञ और मंदिर उद्‌घाटन का कार्यक्रम हुआ था । सेवा भावी कई हरिभक्त छोटी-बड़ी सेवा का यजमान बने ते । ता. ४-६-१९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हातो द्वारा श्री कष्टभंजनदेव की प्राण प्रतिष्ठा तथा निज मंदिर में प्रस्थापित ठाकुरजी को ६ठ्ठा पाटोत्सव की आरती विधिवत रुप से पूर्ण हुई।

इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि अनेक संत महंत आये थे । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को आशीर्वाद प्रदान किये थे । सभा का संचालन स.गु.शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री)ने किया था । (कोठारी श्री न्यु राणीप मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेकनिकल) घाटलोडिया का दूसरा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेकनीकल) घाटलोडीया के द्वितीय पाटोत्सव को उल्लास पूर्वक मनाया गया।

पाटोत्सव के अन्तर्गत तारीख ५-६-१९ से ७-६-१९ तक तीन दिन रात्रीकालीन व्याख्यान माला का आयोजन किया गाय था।

जिस में प्रथम दिन अ.मु. गोपालानंद स्वामी के जीवन पर स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (आदरज) ने सुंदर विवेचन किये थे । दूसरे दिन स.गु. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) अपने आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के प्रेरणात्मक प्रसंग प्रस्तुत कीये । तीसरे दिन पू. स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने डांगरवा के महामुक्त जनतबा प्रेरणामत अवसर पर बोले थे।

ता. ८-६-१९ के पाटोत्सव अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. हरिकृष्णदासजी तथा पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) तथा तीर्थो से आये संतोने प्रेरणादायक आशीर्वाद दिये । संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण हुआ था । ठाकुरजीके लिये बहनोने अन्नकूट के लिये अनेक भोज्य पदार्थ बनाये थे । कई हरिभक्त तन, मन और धन से सेवा किये थे। सम्पूर्ण आयोजन स.गु. पू. महंत शा.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के सुंदर मार्गदर्शन से हुआ था।(रमेशभाई पटेल कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर (कडी खावरिया) चौथा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर का चौथा पाटोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया । ठाकुरजी की अन्नकूट आरती शा. पी.पी. स्वामी और संत मंडल कथा-वार्ता भजन किये थे । पाटोत्सव के यजमान श्री नरोतमभाई पंचाल परिवार था।(धनवंतबाई बी. पटेल)

श्री नरनारायणदेव बालिका मंडल (हवेली) श्री स्वामिनारायण म्यूजियम का दर्शन

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा सांख्ययोगी मंजूबा तथा भारतीबा की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हवेली में बालिकाओ में संस्कार सिंचन और अपने मूल सम्प्रदाय की परम्परा की समझ और ज्ञान हेतु हमारे श्री नरनारायणदेव बालिका मंडलने अपने श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में ता. ९-६-१९ के दिन दर्शन का आयोजन किया गया था।

ता. ९-६-१९ ने सर्व प्रथम परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके नारणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर ठाकुरजी दर्शन कराये थे । वहाँ चलती बाल सभा की प्रवृत्ति में बच्चियाँ लाभ लेकर राजभोग आरती का दर्शन करके प्रसाद प्राप्त किये । सभी श्री स्वामिनारायण भगवान के नाम की धुन और कीर्तन करते श्री स्वामिनारायण म्यूजियम पर आये थे । श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में सब में सर्वोपरि श्रीजी महाराज के स्पर्श वाला प्रसाद देखकर लोग भाव-विभोर हो गये थे । श्री स्वामिनारायण म्यूजियम का दर्शन करके गाँधी आश्रम गये । बाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर वापस आये थे । वास्तव में आज का दिन सभी लडकियो के लिये यादगार दिन बना था । (संचालित कीर्तिदाबेन मोदी और अरुणाबेन)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलाक १९२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रदासदासजी तथा कोठारी स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका का १९२ वाँ पाटोत्सव विधिवत रुप से पूर्ण हुआ था ।

पाटोत्सव के अवसर पर ता. १८-५-१९ से ता. २२-५-१९ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंधपंचान्ह पारायण सा. स्वा. हरिजीवनदासजी के वक्ता पद से हुआ था ।

वैशाख वद-५ ता. २२-५-१९ प्रातः ठाकरजी का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट आदि किया गया था । प्रसंगोचित सभा में हरिभक्तोने भगवान श्रीहरि की महिमा का वर्णन किये ।(पूजारा सुरेशचंद्र आर. धोलका)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर ठाकुरजी को चंदन की वाघा का दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में बिराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज चंदन का वाधा लगा कर दर्शन कराया गया । वैशाख सुद-१५ को ठाकुरजी को केसर स्नान कराया गया था । ता. ९-६-१९ के दिन ठाकुरजी के सामने आम का उत्सव मनाया गया था । महंत स्वामी सभी हरिभक्तोने कथा करके सुंदर लाभ दिये ।(कृणाल भगत - हिंमतनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वागोसणा का ३७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् स.गु. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वागोसणा का ३७ वाँ पाटोत्सव ता. ७-६-१९ के दिन उल्लास से मनाया गया था । इस अवसर पर महापूजा ठाकुरजी का अन्नकूट किया गया था । प्रसाद के यजमान अ.नि. पटेल चंदुलाल का अन्नकूट किया गया था । प्रसाद के यजमान अ.नि. पटेल चंदुलाल मोतीदास परिवार था । वर्तमान में राजेन्द्रभाई थे । हरिभक्त दर्शन करके प्रसाद लेकर धन्य हुए । (कोठारी भगुभाई मोतीदास पटेल)

बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा गरीबो को वस्त्र वितरण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी हरिभक्तो को कई बार बोलते है । जरुरतमंद लोगो की सहायता करो । इस आज्ञा का प्रत्येक हरिभक्त पालन करता है । अभी बालासिनोर में श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर में महामंत्र की धुन की गयी । साथ में १३५ लोगो को कपडा का प्रसाद वितरण किये थे । वरासा प्राथमिक विद्यालय में कपडा अन्न बाँटा गया था । ऐसी सुंदर समाज उपयोगी प्रवृत्ति मंदिर के प्रमुख मधुकरभाई त्रिवेदी, जय काछिया, गोविंदभाई, राकेशभाई, नवीनभाई और पूजारी महेन्द्रभाई आदि जुड गये थे । (कोठारीश्री बालासिनोर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा (कडी) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् नारणपुरा (कडी) गाँव के नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अन्तर्गत ता. १६-९-१९ से ५-६-१९ के बीच श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी (कलोल) गुरुकुल वक्ता पद पर हुआ था । साथ ही साथ अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन, विष्णुयाग तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम और रास गरबा मनाया गया था ।

ता. ५-६-१९ के शुभ दिन पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा नये मंदिर में ठाकुरजी की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे पूर्ण हुई थी ।

प्रसंगोचित सभा में अहमदाबाद, गांधीनगर, नारणपुरा, हाथीजण, प्रांतिज और हरिद्वार आदि मंदिर के संत श्रीहरि की महिमा बताये थे । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये । यहाँ नारणपुरा गाँव और देश-विदेश में रहने वाले हरिभक्तोने लाभ लिया । (कोठारीश्री सत्संग समाज - नारणपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पलसाणा स्वर्ण जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से और समस्त पलसाना गाँव के तरफ से श्री स्वामिनारायण मंदिर के ५० वर्ष पूरे होने पर स्वर्ण जयंती महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ की तीन दिन की कथा शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर हुई थी। साथ में विष्णुयज्ञ का सुंदर प्रबन्धकिया गया था।

ता. ७-५-१९ से ९-५-१९ कथा आदि सुदंर कार्य प्रारम्भ हुआ। उस समय प.पू. लालजी महाराजश्री भी आये ते। और निज मंदिर में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारे। सभा में हाजिर सभी को आशीर्वाद दिये थे।

अहमदाबाद जमीयतपुरा और गाँधीगनर से संत आये थे। श्री नरनारयणदेव युवक मंडलने प्रेरणादायक सेवा दिये थे। (कोठारीश्री तथा सत्संग समाज पलसाणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर का १५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पेथापुर मंदिर के महंत स्वामी धर्मप्रवर्तदासजीके अच्छे मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर का १५ वाँ पाटोत्स विधिपूर्वक किया गया था। ता. १५-३-१९ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथो द्वारा ठाकरुजी का पुष्पाभिषेक वेद विधिसे किया गया। बाद में सभा को आशीर्वाद प्रदान किये।

ता. १५-५-१९ से २०-५-१९ तक रात्रि श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा पुराणी स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बावला महंतश्री) वक्ता पद पर हुआ था। सभा का संचालन स.गु. स्वा. घनश्यामजीवनदासजीने किया था। सुंदर सत्संग डायरो भी हुआ था।

ता. १५-५-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की गयी। पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. जगदीशभाई पटेल परिवार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पूजन-अर्चन करके आरती उतारे तथा आशीर्वाद प्रदान किये। तीर्थो से आये संतो की अमृतवाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने पूरी सभा को आशीर्वाद दिये। १५०० जितने हरिभक्त देव दर्शन कथा श्रवण धर्मकुल दर्शन करके प्रसाद लेकर धन्य हुए। (कोठारी मुकुन्दभाई परमार)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्रीहरि के चरणो से अंकित महान पवित्र मेथाण गाँव में रात्रि कालीन कथा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से सर्वोपरि भगवान श्रीहरि के दिव्य चरणो की प्रसादीभूत मेथाण गाँव में ता. १२-५-१९ से १५-५-१९ तक श्रीमद् भक्त चिंतामणी ग्रन्थ की तीन दिन की कथा स.गु. स्वामी सत्संगसागरदासजी तथा स्वामी नित्यप्रकादासजी (सुरेन्द्रनगर) का वक्ता पद पर कार्यक्रम पूर्ण हुआ। गाँव के सभी हरिभक्तोने कथा का श्रवण किया। अलौकिक लाभ लिये। संतने युवको को व्यसन मुक्ति का ज्ञान कराया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (प्राचीन) ४५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि. स.गु. शा. स्वा. विज्ञानदासजी तथा अ.नि. स.गु. शा. स्वा. गोपालचरणदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा श्रीहरिकृष्णधाम के पू. स्वामी भक्तिहरिदासजी के सुंदर प्रयास से मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर (प्राचीन) दरबार गढ का ४५ वाँ पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १६-५-१९ से ता. २०-५-१९ के मध्य श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा० श्रीहरियज्ञ आदि किये गये थे।

ता. २०-५-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे। और निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके सभी को आशीर्वाद प्रदान किये। प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आये थे। और सभी बहनो को दर्शन और आशीर्वाद दिये।

सभा में पू. स.गु. शास्त्री बड़े पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) यहाँ के धर्मजीवन स्वामी कथा का सुंदर लाभ दिये। इस अवसर पर संत प्रवचन, महिला मंच अन्नकूट आरती, ठाकुरजी का अभिषेक, धर्मकुल का पूजन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था। सम्पूर्ण अवसर पर उलीयावाला मनोजभाई तता मोरबी के हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा किये थे। सभा का संचालन विश्वनंद स्वामी और शा. भक्तिनंदन स्वामीने किया था। सभी हरिभक्त देव दर्शन, धर्मकुल दर्शन करके धन्य हुए। (प्रति. अनिल दूधरेजिया)

धांगधा श्री स्वामिनारायण मंदिर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से घ्रांगघ्रां श्री स्वामिनारायण मंदिर में ज्येष्ठ सुद-१० को श्रीहरि स्वधाम गमन तिथि का अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गई । ऋषिप्रकाश स्वामीने सुंदर आयोजन किया था । श्रीहरि सत्संगमंडळ नरसीपूरा के भक्तो ने धुन गाये । अंत में सभी लोग प्रसाद लेकर अपने घर गये । (प्रति. अनिल दूधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन का १९ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहा के महंत स्वामी सुव्रतदासजीके मार्गदर्शन से हमारे श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर ह्युस्टन का १९ वाँ पाटोत्सव ३ जून से ८ जून तक मनाया गया । इस अवसर के उपलक्ष्य में श्रीहरि वन विचरण पंच दिन की कथा शा. सुव्रतमुनिदाजी के वक्ता पद से हुई । यहाँ मंदिर के पार्षद महेन्द्र भगत ने सुंदर प्रबन्धकिये थे । पहले दिन पोथीयात्रा उल्लास से कीर्तन-भजन धुन करते अष्ट-लक्ष्मी मंदिर तक भगवान को संगीत के साथ सभी लोग गये । अन्तिम दिन ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक संतो द्वारा पूर्ण किया गया । पाटोत्सव के यजमान प्रविणभाई शाह परिवार और कथा के मुख्य यजमान प्रज्ञेशभाई चतुरभाई पटेल तथा अन्य सेवा में सेवा का लाभ दिये । सेवा करने वाला का सन्मान किया गया । इस अवसर पर महंत विश्वविहारी स्वामी (कंटकी) और भरतभाई भगत (कोलोनिया) से आये थे । (प्रविण शाह)

पारसीप छपैयाधाम मंदिर का पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पारसीप मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी और उनके गुरु स.गु. महंत शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर मंदिर) के सुंदर प्रेणा मार्गदर्शन से अपने छपैयाधाम पारसीप के श्री स्वामिनारायण मंदिर का चौथा पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत कथाक I संगीतमय सुर के साथ स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी ने कथा सुनाया था । पोथीयात्रा उल्लास के साथ संत और हरिभक्त विशाल समुदाय में कीर्तन-भजन करते निकले थे । यजमान परिवार वक्ताश्री का पूजन करके व्यास पीठ की आरती उतारे थे । कथा में आनेवाले जन्मोत्सव, रुक्ष्मणी विवाह आदि प्रसंग उल्लास पूर्वक मनाया गया था । सेवा करने वाले यजमानो का सभा में सन्मान किया गया था । अन्तिम दिन ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट आरती और कथा की पूर्णाहुति के बाद सभी भक्तोने समूह में प्रसाद लिया । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी और भरत भगत भगत के सुंदर मार्गदर्शन सें अपने हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में शनिवार साम को ५ से ८ तक मंदिर के सभा मंडप में महंत स्वामी ने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की लीला चरित्र कथा का श्रवण किये थे। सेवा करने वाला हरिभक्तो का फूलहार पहनाकर सन्मान किया गया था । अंत में जनमंगल पाठ श्री हनुमान चालीसा का पाठ करके थाल आरती नित्य नियम करके सभी को प्रसाद खिलाया गया । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण हिन्दू मंदिर एलनटाउन (वडतालधाम)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी धर्मकिशोरददाजी के मार्गदर्शन से अपने श्री स्वामिनारायण हिन्दू मंदिर एलनटाउन में विकेन्ड शनिवार को शायं को ५ से ८ के बीच से सुंदर सत्संग सभा हुई । सर्व प्रथम महामंत्र धुन, कीर्तन हरिभक्तो द्वारा किया गया था । महंत स्वामीने कथा का सुंदर रसपान कराया । श्रीहरि और धर्मकुल का माहात्म्य समझाये थे । महंत स्वामी द्वारा यजमानो का सन्मान किया गया था । ठाकुरजी की आरती नित्य नियम करके सभी लोग प्रसाद लेकर अपने घर गये । (प्रवीण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) ईडर मंदिर के १७३ वे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते । और सभा को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(२) सम्प्रदाय के सर्वोपरी तीर्थ छपैया मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते संतो । (३) मूली मंदिर में नर्मदानीर को चढाते पू. महंत स्वामी और संत हरिभक्त । (४) जीवराजपार्क मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करते हुए कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी ।(५) नारणघाट मंदिर में ठाकुरजी का केसर स्नान करते हुए संतो ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

3

4

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर राले (अमेरिका) मंदिर के दूसरे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन । (२) पारसीपनी (अमेरिका) मंदिर के दूसरे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन । (३) आई.एस.एस.ओ. सेवा द्वारा डोनेशन कैम्प के समय वालेटियर । (४) अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के केसर स्नान अवसर पर पूजा करते हुए यजमान परिवार ।

गुरु पूर्णिमा

प.पू. भावि के आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का
२२ वाँ प्रागट्योत्सव

अषाढ सुद-१५ ता. १६-७-२०१९ मंगलवार

शुभ स्थान : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१

Daily Darshan Whatsapp no. **+91 9909 967104**

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in

Follow Us @ nndkalupurmandir

Praful Kharsani